Report of one day International Seminar on Oct. 27th, 2017

विषय : वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी : विस्तार और चुनौतियां

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय में प्रो॰ कैलाश चन्द्र शर्मा, कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की अध्यक्षता में, प्रो॰ ललित बिहारी गोस्वामी, मुख्य अतिथि, दिल्ली यूनिवर्सिटी, प्रो॰ सरन घई, मुख्य वक्ता, विश्व हिन्दी संस्थान कनाडा, प्रो॰ मीरा गौतम, विशिष्ट अतिथि, पूर्व अधिष्ठाता भाषा एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, डॉ॰ बी॰ डी॰ शर्मा, विशिष्ट अतिथि, पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला, प्रो॰ मंजुला चौधरी, संगोष्ठी निदेशक व डॉ॰ कामराज सिन्धु, संगोष्ठी संयोजक ने दीप प्रज्ज्वलित कर एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया ।

प्रो॰ कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि यह सर्वविदित तथ्य है कि हिन्दी का विस्तार एवं प्रचार आज वैश्विक स्तर पर हो रहा है । हिन्दी पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण निरन्तर ऊचाँइयों को स्पर्श कर रही है । उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी मातृभाषा के विस्तार के साथ-साथ सबल और स्वावलम्बी बनाने का निरन्तर प्रयास करें और हिन्दी को विश्व में गौरवमय स्थान दिलाने की दिशा में इसके रास्ते में आने वाली प्रत्येक चुनौतियों और बाधाओं को ध्यान में रखकर सार्थक और ईमानदार प्रयास करें ।

प्रो॰ कैलाश चन्द्र शर्मा जी ने याद दिलाया की स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि 17वीं शताब्दी इंग्लैण्ड की, 18वीं शताब्दी फ्रांस की, 19वीं जर्मनी, 20वीं अमेरिका व 21वीं शताब्दी भारत की होगी । प्रो॰ कैलाश चन्द्र शर्मा ने संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय के समस्त टिचिंग व नान टिचिंग स्टाफ को बधाई भी दी ।

मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रो॰ ललित बिहारी गोस्वामी उपस्थित हुए । उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि आज पूरे विश्व में हिन्दी भाषा को जानने व बोलने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है । उन्होंने कहा कि हम सब हिन्दी भाषा के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें क्योंकि यही वह पक्ष है जिसके द्वारा हिन्दी भाषा का कल्याण हो सकता है । उन्होंने कहा कि हिन्दी का सन्देश हमें देश व विदेश के हर कोने तक लेकर जाना है । देश के हर युवा को नया रास्ता दिखाने के लिए हिन्दी भाषा को जीवन का हिस्सा बनाने की जरूरत है ।

मुख्य वक्ता के रूप में प्रो॰ सरन घई, विश्व हिन्दी संस्थान, कनाडा उपस्थित हुए । उन्होंने पुरे विश्व के अन्दर हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार के लिए विश्व हिन्दी संस्थान, कनाडा द्वारा किए गए प्रयासों को सांझा किया । उन्होंने विश्व में हिन्दी विस्तार के उपाय बताए व इसके विस्तार में आने वाली अनेकों चुनौतियों से भी रूबरू करवाया । उन्होंने कहा कि इस तरह की संगोष्ठियों के माध्यम से व विस्तार पूर्वक विचार मंथन करने से ही निश्चित रूप से हिन्दी विस्तार में आ रही चुनौतियों व

समस्याओं का हल निकाला जा सकता है । विशिष्ट अतिथि प्रो॰ मीरा गौतम व डॉ॰बी॰ डी॰ शर्मा ने भी हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी विस्तार और चुनौतियों के सन्दर्भ में अपने विचार सांझा किये ।

शोध-आलेख प्रस्तुतीकरण :

विश्व स्तरीय इस एक दिवसीय संगोष्ठी दिनांक 27.10.2017 में दो विशेष व्याख्यान सत्र रखे गए । पूर्व उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो॰ अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, सत्र संयोजक प्रो॰ पुष्पा रानी, विभागाध्यक्ष हिन्दी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र व सहयोग स्वरूप डॉ॰ अजायब सिंह जी॰ एम॰ एन॰ कॉलेज, रादौर व डॉ॰ बलबीर सिंह, दयाल सिंह कॉलेज करनाल ने अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाई । वही डॉ॰ रमाचन्द्र, यू॰ सी॰ के॰, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने संचालन की भूमिका निभाई ।

दूसरे सत्र का संचालन डॉ॰ जितेन्द्र आचार्य, दूरवर्ती निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने सम्भाला तथा इस सत्र की अध्यक्षता के रूप में प्रो॰ हेमलता महेश्वर, विभागाध्यक्षा हिन्दी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली ने अपनी भूमिका निभाई । वही सत्र के संयोजक के रूप में प्रो॰ सुभाष चन्द्र, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र व सहयोग स्वरूप डॉ॰ महा सिंह पूनिया, यू॰ जी॰ के॰, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र तथा डॉ॰ राजेश रानी, राजकीय महाविद्यालय करनाल ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई ।

इस संगोष्ठी के समापन व्याख्यान में बोलते हुए प्रो॰ अनिल वोहरा शैक्षणिक अधिष्ठाता, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने आज के सन्दर्भ में हिन्दी भाषा के योगदान को सराहा, वहीं यह भी बताया की मातृभाषा का जितना सम्मान किया जाता रहेगा, राष्ट्र उतनी ही उन्नति की ओर अग्रसर होता रहेगा ।

संगोष्ठी की रिपोर्ट डॉ॰ विद्या चौधरी, दूरवर्ती शिक्षा निर्देशालय ने सबके समक्ष सांझा की, वहीं डॉ॰ जितेन्द्र आचार्य ने सभी भारतीय एवं विदेश से पधारे महानात्माओं का आभार-प्रदर्शन करके धन्यवाद ज्ञापित किया । इस संगोष्ठी में 20 से अधिक शोध-आलेखों का वाचन किया गया । इस संगोष्ठी में 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

समापन समारोह के मौके पर संगोष्ठी की निर्देशिका प्रो॰ मंजुला चौधरी, आयोजक सचिव, डॉ॰ कामराज सिन्धु, डॉ॰ संगीता सेठी, डॉ॰ गीतिका सन्धू, डॉ॰ खुशविन्दर कौर, डॉ॰ जी॰ पूनमनी, डॉ॰ रवि, डॉ॰ सुखजीत कौर, डॉ॰ ज्योति भट्ट, डॉ॰ विद्या चौधरी, डॉ॰ सुभाष, डॉ॰ महासिंह पूनिया सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी मौजूद रहे ।